चलचित्रीय संगीत में रस

सुरेन्द्र कुमार
एम.ए. (वोकल)
कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी

चलचित्रीय संगीत यानि हमारे सिनेमा, फिल्मो, नाटको आदि में प्रयोग किया जाने वाले संगीत जो भी हम उनको देखते हुए अभिनय करते हुए एवम नृत्य करते हुए सुनते है, उसे चलचित्रीय संगीत कहा जाता है ! जैसा कि आज का मेरा टापिक है, चलचित्रीय संगीत में रस, संस्कृत साहित्य – शास्त्र के सन्दर्भ में, तो चलचित्रीय संगीत में रस को जानने से पहले यह जान लेना आवश्यक है, कि रस क्या है? कितने प्रकार का होता है ? किस प्रकार से किसी रस को पहचाना जा सकता है ?

रसः– वैसे तो रस का अर्थ व परिभाषा बहुत से संस्कृत ग्रंथो में दी गई है ! उन सभी संस्कृत – शास्त्रों का वर्णन न करते हुए यहा केवल भरत मुनि के रस के सूत्र की संक्षिप्त व्याख्या की जा रही है ! भरत मुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र के छटे अध्याय मे रस के सूत्र का बहुत सुंदर वर्णन किया है ! बताते है, "विभावानुभावव्याभिचारी संयोगाद्स निषपतिः"!

इसका अर्थ है, कि विभाव, अनुभाव और वयाभिचरी भांवो के स्थायी भाव के साथ संयोग से रस की निष्पति होती है, निष्पति एक शब्द है, जिसका साधारण शब्दों के अर्थ है, रस की प्राप्ति होना ! आगे वे कहते है, " रस इति कः पदार्थः ?" अब भरतमुनि जी स्वंय प्रश्न करते हैं और फिर स्वंय उसका उत्तर देते है, "आस्वाधतवात", 'अर्थात रस में आस्वाध प्रदान करने का गुण होता है ! इसीलिए ही उसे रस कहते हैं! रस की परिभाषा देते हुए भरत मुनि जी कहते है, कि रस नाटक का वह तत्व होता है, जो कि सहिरदय को आस्वाध को प्रदान करता है और जिसके आस्वाध से वह हृषत हो उठता है ! उन्होंने रस सूत्र को आसान शब्दों में इस प्रकार बताया है, कि जिस प्रकार नाना प्रकार के व्यंजनों, औषधियों एवम द्रव्य पदार्थों के मिश्रण से उसी प्रकार रस की निष्पति होती है, उसी प्रकार नाना प्रकार के भावों के संयोग से स्था भाव भी नाट्य रस को प्राप्त हो जाते है ! साधारण शब्दों में रस की शाब्दिक अर्थ होता है, वह होता है, आनन्द अर्थात किसी

भी नाटक, कहानी, फिल्म, आदि को देखकर, सुनकर जो रस की अनुभूति होती है, उसे रस कहा जाता है! भरतमुनि के अनुसार रसो की संख्या आठ बताई है जो इस प्रकार से है, श्रृंगार रस, हास्य रस, करुण रस, वीर रस, रोद्र रस, भयानक रसृ, वीभत्स रस, अद्‌भुतरस, ! इस प्रकार शांत रस को भरतमुनि ने रस नही माना ! इसके अतिरिक्त सूरदास जी ने रसो की संख्या गयारह बतायी गयी है उन्होंने इन नौ रसो के अतिरिक्त वात्सल्य और भक्ति रस को भी रस की श्रेणी में माना है !

तो जैसा कि मेरा आज का टापिक है, चलचित्रीय संगीत में रस ! इस प्रकार अब हम इन सभी रसों को अपने सिनेमा से जोड़ने की कोशिश करेंगे ! किसी फिल्म के किस गाने में कोन सा रस है, इसे हम उदाहरण सहित जानेंगे !

चलचित्रीय संगीत में रसः– चलचित्रीय यानि हमारे फ़िल्मी संगीत में रस का वर्णन इस प्रकार से है!

1. **श्रृंगार रस :–** श्रृंगार रस के दो प्रकार बताए गए हैं, संयोग श्रृंगार रस और वियोग श्रृंगार रस ! संयोग श्रृंगार रस मे और स्त्री और पुरुष के मिलन के बारे में वर्णन किया जाता है ! संयोग श्रृंगार रस का एक उदहारण यहाँ दिया जा रहा है जो कि हमारी फिल्म विवाह से है ! इसका एक सुन्दर गाना है ! दो अनजाने अजनबी चले बांधने बंधन, हाथ रे कल के सजनी साजन रे मिलकर क्या बोले ! क्या बोले क्या बोले मिलकर क्या बोले ! यह सुप्रसिद्ध गायक उदित नारायण जी और श्रेया जी ने गाया है ! इसमें नायक शाहिद कपूर व नायिका अमृता राव है ! यहा इसमें नायक से नायिका के मिलन के अवसर पर यह गीत गाया व दिखाया जा रहा है !

इसी प्रकार से भरत के नाट्यशास्त्र कृत श्रृंगार के दूसरे रस का वर्णन उदाहरण सहित दिया जा रहा है (जो कि योग संयोग श्रृंगार रस है ! यह फिल्म बॉर्डर का गीत है, जो नायक सुनील शेटटी व नायिका सहाबानी की जब फिल्म में शादी होती है, तो तभी आमह्व वाले सुनील शेटटी को वापिस लेने आते है, क्योकि सुनील शेटटी को वापिस लेने आते है, क्योंकि सुनील इसमें फ़ौजी है तो जब नायक व नायिका इसमें बिछुड़ते है, जो वियोग पर एक गीत चलता है जिससे हमें वियोग श्रृंगार रस की अनुभूति होती है ! गीत इस प्रकार है " ऐ जाते हुए लम्हों जरा ठहरो जरा ठहरो में भी तो चलता हूँ जरा उनसे तो मिलता हूँ, जो एक बात दिल में है उनसे कँहू ! तो चलूँ, तो चलूँ , तो चलूँ ! इसके गायक हैं "रूप सिंह राठोर" !

2. **हास्य रस :–** भरतमुनि जी ने दूसरा रस हास्य बताया है ! इसका वर्णन हमारे चलचित्रय संगीत में फिल्म 'जुदाई' का गाना है, उसमे किया गया है, जो इस प्रकार से है, 'शादी करके फँस गया यार अच्छा खासा था कँवारा' ! इसमें जानी लिवर ने जोकरों की तरह अभिनय किया है, जो कि हास्य रस को प्रगट करता है ! जिसे देखकर हमे हँसना आता है ! इसके गायक बाली ब्रहमभट्ट, अलका यागनिक तथा शंकर महादेवन जी है !

3. करुण रसः– हमारे संस्कृत शास्त्रों में रस के एक ओर रूप करुण रस का भी वर्णन है ! चलचित्रीय संगीत में करुण रस का उदाहरण इस प्रकार से दिया जा सकता है ! करुण रस में हमे रोना आता है, दुःख होता है ! यह प्रेमग्रंथ फिल्म का गीत है जो कि गायिका लता मंगेशकर के द्वारा गया गया है ! मैं कमजोर औरत ये मेरी कहानी, मेरे आसुँओं से गंगा में पानी ! इसमें नायिका माधुरी दीक्षित अपने दुःख में रोती हुई इस गीत में अभिनय करती हुई नजर आ रही है!

4. वीर रसः– आगे यहाँ वीर रस को भी चित्रपट संगीत से जोड़ा गया है ! वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है ! इसमें जब देश के प्रति हमारे अन्दर उत्साह जगता है, या कोई भी वीरता की भावना उत्पन्न होती हैं दुश्मनों से लड़ने के लिए तो उससे वीर रस उत्पन होता है ! यहाँ हमारे चित्रपट संगीत में "माँ तुझे सलाम" फिल्म का यह एक गीत है, जिसमे नायक सन्नी दयोल जो कि फ़ौजी है जब वह दुश्मनों से लड़ने जाता है, तो वह यह गीत चलता है जो इस प्रकार है, " बांध कफन अपने सर पर हम देखो वीर जवान चले, एक तिरंगे के पीछे य सारा हिदुस्तान चले माँ तुझे सलाम, मा¡ तुझे सलाम ! इस गीत के गायक शंकर महादेवन जी है !

निष्कर्षः– इस प्रकार अन्त में यह कहा जा सकता है, कि हमारे संस्कृत शास्त्रों में रस के अन्य रूपो का भी वर्णन किया गया है तथा इसी प्रकार उन सभी प्रकार के रस के रुपों को हमारे चित्रपट संगीत में हमारे संगीतकार, गीतकार व गायकों ने बहुत सुन्दर प्रकार से प्रस्तुत किया है! जिसमें नायकों व नायिकाओं के अभिनय भूमिका भी कम नही है ! इस प्रकार से हमारे अभिनय की प्राचीन संस्कृतिक शास्त्रों मे रस के जिन रुपो के बारे में जो वर्णन किया गया है, वह हमारे चित्रपट संगीत में स्पष्ट रूप से दिखाई व सुनाई देता है !